

‘हिंदुत्व का आधार नफरत नहीं, लोगों को जोड़ना है’

लंदन में बोले
मोहनजी भागवत

नई दिल्ली : अमेरिका और कनाडा के बाद अब यूके में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत अपने हिंदुत्व की छवि चमकाने पहुँचे। विदेशों में 'सर्वधर्म समभाव' वाली छवि बनाने की कोशिश के तौर पर आलोचना झेल रहे मोहन भागवत ने लंदन में विविधता पर भाषण दिया है। उन्होंने लंदन में भारतीय प्रवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि 'हिंदू राष्ट्र' का मतलब किसी एक धर्म, पूजा-पद्धति या जीवनशैली पर आधारित राष्ट्र नहीं है, बल्कि यह विविधता को स्वीकार करने वाली सोच है। उन्होंने कहा कि एकता के लिए सभी लोगों का एक जैसा होना जरूरी नहीं है।

भागवत का यह बयान तब आया है जब अमेरिका और ब्रिटेन में उनके कार्यक्रमों को लेकर कुछ संगठनों ने विरोध भी जताया है और आरएसएस की विचारधारा पर सवाल उठाए हैं। यह कार्यक्रम आरएसएस के १०० वर्ष पूरे होने के अवसर पर चल रहे अंतरराष्ट्रीय संपर्क अभियान का हिस्सा है। इससे पहले मोहन भागवत न्यूयॉर्क और टोरंटो में भी भारतीय समुदाय को संबोधित कर चुके हैं।

भले ही भारत में आरएसएस और इससे जुड़े संगठनों और लोगों की गतिविधियों पर

१९ भागवत ने कहा कि समाज को उन बातों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए जो लोगों को जोड़ती हैं, न कि उन बातों पर जो उन्हें अलग करती हैं। उन्होंने कहा कि एकता का रास्ता समानता से नहीं, बल्कि विविधताओं का सम्मान करते हुए साझा मूल्यों पर आगे बढ़ने से निकलता है।

विविधता को दबाने और सिर्फ हिंदुत्व को उभारने में लगे रहने का आरोप लगा रहा है, लेकिन लंदन में भागवत का बयान बिल्कुल इसके उलट रहा। प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान मोहन भागवत ने कहा कि 'हिंदू' शब्द को केवल किसी धर्म, पूजा-पद्धति या जीवनशैली के आधार पर नहीं समझा जा सकता। उनके अनुसार, हिंदू होने का अर्थ है सभी प्रकार की विविधताओं का सम्मान करना और उन्हें स्वीकार करना।

भागवत ने कहा कि भारत की परंपरा हमेशा से अलग-अलग विचारों को स्वीकार करने की रही है। यहाँ तक कि नास्तिक विचार भी भारत की धरती से ही निकले। उन्होंने कहा कि भारत की सोच यह रही है कि हर व्यक्ति का रास्ता सही हो सकता है और सभी अंततः एक ही लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

आरएसएस की राजनीतिक शाखा



बीजेपी की सरकारें एक के बाद एक राज्यों में एंटी कंसेर्वेशन कानून लाती जा रही हैं और इसे मुसलमानों और ईसाइयों पर हमले के तौर पर देखा जा रहा है, लेकिन लंदन में भागवत ने भाषण दिया, 'हमें एक-दूसरे को बदलने या धर्म परिवर्तन कराने की जरूरत नहीं है। यह कहना कि केवल हमारा रास्ता ही सही है, हिंदू दृष्टिकोण नहीं है। हिंदू सोच कहती है कि हम भी सही हैं और आप भी सही हो सकते हैं।'

ब्रिटेन के हिंदुओं को ऐसी सलाह!

कार्यक्रम के दौरान एक सवाल यह भी पूछा गया कि अगर कभी ब्रिटेन और भारत के हितों में टकराव हो जाए तो ब्रिटेन में रहने वाले हिंदुओं को किसका साथ देना चाहिए। इस पर मोहन भागवत ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति सच्चे अर्थों में हिंदू है तो

विविधता में भी हिंदू राष्ट्र की ही बात

अपने संबोधन में मोहन भागवत ने हिंदू राष्ट्र के अपने प्रोजेक्ट को दुनिया के सामने बड़े ही मोहक अंदाज़ में पेश किया। इसके लिए उन्होंने 'नेशन' और 'राष्ट्र' के बीच अंतर भी समझाया। उन्होंने कहा कि पश्चिमी देशों में 'नेशन' आमतौर पर भाषा, धर्म, संस्कृति या शासन व्यवस्था जैसी समानताओं के आधार पर बनता है। वहाँ राज्य समान नियम लागू करके लोगों को जोड़ता है। इसके विपरीत, उन्होंने कहा कि 'राष्ट्र' का आधार समान उद्देश्य होता है। उनके अनुसार भारत का 'हिंदू राष्ट्र' इसी विचार पर आधारित है कि विविधता स्वाभाविक है और एकता ही अंतिम सत्य है।

भागवत ने कहा कि भारत पर कई बार विदेशी आक्रमण हुए और देश लंबे समय तक गुलाम भी रहा, लेकिन इसके बावजूद भारत का 'राष्ट्र' भाव समाप्त नहीं हुआ क्योंकि लोगों का साझा उद्देश्य बना रहा।

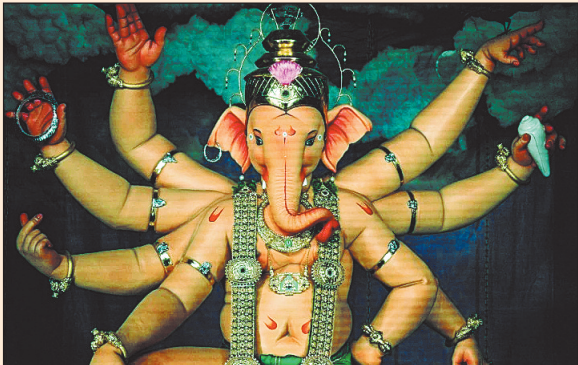
देश भर में हिंदुत्व के नाम पर हिंसा की आ रही खबरों के बीच भागवत ने 'हिंदू राष्ट्र' को आदर्श रूप में पेश किया। आरएसएस प्रमुख ने कहा कि हिंदू राष्ट्र का उद्देश्य दुनिया को यह संदेश देना है कि विविधता प्रकृति का नियम है और एकता सबसे बड़ा सत्य है। उन्होंने कहा कि यदि भारत इसी दिशा में आगे बढ़ेगा तो भविष्य में न तो तानाशाही पैदा होगी और न ही युद्ध जैसी स्थितियाँ बनेंगी।

हाल में देश में सरकारी नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे जैन ज़ी और जैन अल्फा को लुभाने में जुटे मोहन भागवत ने कहा कि उन्हें नई पीढ़ी पर पूरा भरोसा है। उनके अनुसार आज के युवा दुनिया को बेहतर बनाना चाहते हैं और छोटी-छोटी बातों में उलझने के बजाय बड़े उद्देश्य के लिए काम करने को तैयार हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को केवल लक्ष्य बताया जाना चाहिए, उन पर काम करने का तरीका नहीं थोपा जाना चाहिए।

ऐसी स्थिति शायद पैदा ही नहीं होगी।

लेकिन भागवत ने यह भी कहा कि अगर कभी ऐसा हो भी जाए तो ब्रिटेन के नागरिक होने के नाते वहाँ रहने वाले हिंदू

स्वाभाविक रूप से ब्रिटेन का साथ देंगे। उन्होंने कहा कि हिंदुत्व कभी भी अपनी कर्मभूमि के साथ विश्वासघात करना नहीं सिखाता।



सीमाएं बदलते ही कैसे बदल जाते हैं गणपति

गणेश चतुर्थी का त्योहार भारत के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग रूपों और मान्यताओं के साथ मनाया जाता है। दक्षिण भारत में गणपति को ब्रह्मचारी माना जाता है जबकि उत्तर भारत में उन्हें रिद्धि-सिद्धि का पति माना जाता है।

भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि गणेश चतुर्थी कहलाती है। इस दौरान गणेशजी की विधि-विधान से पूजा की जाती है। महाराष्ट्र में बड़े पांडालों में गणपति प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं और बीते दशकों में यह दक्षिणी और पश्चिमी घाट से होते हुए ये कल्चर उत्तर भारत में भी त्योहार की शृङ्खले में चुका है। इसलिए गणेश चतुर्थी अब एक क्षेत्र का त्योहार नहीं रह गया है, बल्कि त्योहार की सीमाएं और वर्जनाएं तोड़ने वाली यही खूबी त्योहार के असली रूप-स्वरूप को समझने में मदद करती हैं। अब गणेश चतुर्थी में ही देख लीजिए कि कैसे इस त्योहार से अलग-अलग क्षेत्रों की गणपति मान्यताएं सामने आती हैं और फिर एक हो जाती हैं। गणेशजी कहीं सिद्धि-विनायक हैं, कहीं विघ्नहर्ता, कहीं बाल गणपति तो कहीं महागणपति। इसी तरह कहीं वह विवाहित हैं, कहीं ब्रह्मचारी, कहीं वह तंत्रिक परंपरा में महातंत्र गुरु हैं तो वहीं शाक्त परंपरा उन्हें शक्ति के एक स्रोत के तौर पर देखती है, जिसमें वह शक्ति के गण कहलाते हैं और गणेश बन जाते हैं। गणपति उपासना जितनी प्राचीन और व्यापक हुई, उनके स्वरूपों को लेकर अलग-अलग क्षेत्रों और संप्रदायों में अलग मान्यताएं विकसित हुईं। गणेशजी की पत्नियों के तौर पर कहीं सिद्धि और बुद्धि का नाम मिलता है तो वहीं उत्तर भारत की लोकप्रिय परंपरा में रिद्धि-सिद्धि को उनकी दो पत्नियां माना जाता है। उधर, तंत्रिक उपासना में गणपति अपनी शक्ति के साथ बिल्कुल अलग स्वरूप में सामने आते हैं।

दक्षिण भारत की कई परंपराओं में गणपति को अविवाहित और ब्रह्मचारी माना गया है। यहां गणपति का ब्रह्मचर्य उनके संयम, ज्ञान और आध्यात्मिक शक्ति से जोड़ा जाता है।

इससे जुड़ी एक लोककथा माता पार्वती से भी जुड़ती है। कथा के अनुसार गणेश अपनी माता पार्वती को आदर्श स्त्री मानते थे और उनके समान स्त्री मिलने पर ही विवाह करने की बात कहते थे। ऐसी स्त्री न मिलने के कारण वे अविवाहित रहे। ऐसे ही एक एक दूसरी कथा में गणेशजी को यह ज्ञान हुआ कि संसार की सभी स्त्रियां आदिशक्ति और माता पार्वती का ही अंश है, इसलिए वह किसी भी स्त्री से विवाह नहीं करने का फैसला लेते हैं। इसी कथा को एक और लोककथा विस्तार देती है, जहां दर्ज है कि गणेशजी ने अपने भीतर भी आदिशक्ति के उसी अंश को महसूस किया और जब उसे प्रकट किया तो वह स्त्री गणेश यानी विनायकी देवी के रूप में सामने आईं।

(शेष पेज २ पर)

डोमिनिकन रिपब्लिक की जोहेरी मोल बनी मिस वर्ल्ड



मुंबई : मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता को अपना नया विजेता मिल गया है। ७२वें मिस वर्ल्ड का खिताब डोमिनिकन रिपब्लिक की मॉडल जोहेरी मोल डोमिंगेज ने जीता। उन्होंने स्पेन की मॉडल एलिसाबेथ रेयनेस को फर्स्ट रनर-अप और मलेशिया की तानुसिया चेट्टी को सेकंड रनर-अप के तौर पर पीछे छोड़ा। जोहेरी मोल को पिछले साल की मिस वर्ल्ड विजेता थार्लैड की ओपल सुचाता चुआंगसरी ने 'मिस वर्ल्ड' का ताज पहनाया। ये ताज पाकर उनके चेहरे पर खुशी और आंखों में आंसू थे। ओपल ने जोहेरी को गले लगाकर उन्हें मिस वर्ल्ड बनने की बधाई दी। ओपल अपने देश की पहली प्रतियोगी थीं, जिन्होंने पिछले साल आयोजित ७२वें मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता का खिताब जीता था। मिस वर्ल्ड २०२६ में भारत की ओर से मध्य प्रदेश की निकिता पोरवाल ने भी हिस्सा लिया था। टॉप ४० तक उन्होंने अपनी जगह आसानी से बना ली थी। लेकिन टॉप २० में उन्हें बाहर होना पड़ा। उनका नाम जबसे मिस वर्ल्ड की लिस्ट में शुमार हुआ, तभी से लोगों को उम्मीद

थी कि वो ग्लोबल प्लेटफॉर्म पर देश का नाम रौशन करेंगी। हालांकि ऐसा हो नहीं सका। मिस वर्ल्ड ब्यूटी पेजेंट का ग्रैंड फ़िनाले शनिवार को वियतनाम के न्हा ट्रॉंग में आयोजित हुआ था। भारत के लिए आखिरी बार मिस वर्ल्ड का खिताब बॉलीवुड एक्ट्रेस मानुषी छिल्लर ने जीता था। वो ये ताज साल २०१७ में पहन चुकी थीं। उनसे पहले प्रियंका चोपड़ा ने साल २००० में मिस वर्ल्ड ब्यूटी पेजेंट जीता था। भारत की ओर से ऐश्वर्या राय (१९९४), युक्ता मुखी (१९९९) डायना हेडन (१९९७) और रीटा फारिया (१९६६) ने मिस वर्ल्ड जीता है। साल १९९९ और २००० पहला मौका था, जब भारत ने दो बार लगातार मिस वर्ल्ड का खिताब जीता था। वैसे जिस भी मॉडल ने अभी तक ब्यूटी पेजेंट में खिताब जीता है, उसके लिए बॉलीवुड का रास्ता हमेशा खुला है। ऐश्वर्या राय, प्रियंका चोपड़ा, मानुषी छिल्लर, हरनाज संधू इस बात की गवाह बनी हैं। अब देखना है कि क्या निकिता पोरवाल भी एक्टिंग की तरफ अपना रुख करेंगी या नहीं।

ट्रॉफी तुम रखो, हम ऐसे ही जश्न मनाएंगे : हरमनप्रीत

कप्तान ने नकवी को दिखाया ठेगा!

नई दिल्ली : महिला एशिया कप २०२६ का फाइनल जीतने के बाद भारतीय टीम का एक मजेदार वीडियो वायरल हो रहा है। हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में श्रीलंका को हराकर भारत ने ८वीं बार एशिया कप का खिताब अपने नाम किया। फाइनल जीतने के बावजूद ट्रॉफी लेने से भारतीय महिला टीम ने मना कर दिया। इससे पहले साल २०२५ में स्टीम टीम ने भी पाकिस्तान के खिलाफ फाइनल मैच जीतकर ट्रॉफी नहीं ले सकी थी। भारतीय टीम के इस

काबिलियत साबित करने के लिए ट्रॉफी की जरूरत नहीं

हरमनप्रीत का यह मजेदार अंदाज देखकर पूरी भारतीय टीम ठहाके मारकर हंसने लगी। नकवी से ट्रॉफी नहीं लेने के बाद टीम इंडिया के इस हल्के-फुल्के और बेफिक्र अंदाज ने फैन्स को बहुत आनंदित किया। सोशल मीडिया पर फैन्स इस वीडियो को खूब शेयर कर रहे हैं और लिख रहे हैं कि भारतीय टीम को खुद की काबिलियत साबित करने के लिए किसी ट्रॉफी की जरूरत नहीं है।



फैसले के पीछे की वजह नकवी रहे हैं। हालांकि, मोहसिन पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के चीफ और ACC अध्यक्ष मोहसिन

नकवी रहे हैं। हालांकि, मोहसिन नकवी से ट्रॉफी नहीं लेने के बाद भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने

जिस अंदाज में जीत का जश्न मनाया, उसने हर किसी का दिल जीत लिया। हरमनप्रीत कौर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है।

मोहसिन नकवी की मौजूदगी के कारण भारतीय टीम ने प्रेजेंटेशन सेरेमनी में जाने से साफ मना कर दिया था। जब पूरी टीम मैदान पर एक साथ विकट्री फोटो खिंचवाने के लिए इकट्ठी हुई तो साथी खिलाड़ियों ने हरमनप्रीत के हाथ में पानी की एक बोतल थमा दी। टीम की बाकी खिलाड़ियों ने कप्तान की हौसला अफजाई की। इसके साथ ही उनसे उस बोतल को ही ट्रॉफी की तरह हवा में उठाने को कहा।

यूपी में मस्जिद पर बुलडोजर एक्शन, सियासत गरमाई

प्रशासन को कहना है कि जमीन सरकारी है

मस्जिद कमेटी वक्फ की जमीन बताती है

नई दिल्ली : उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में जिला कलेक्ट्रेट परिसर में बनी मस्जिद को प्रशासन ने शनिवार को बुलडोजर चलाकर हवस्त कर दिया। प्रशासन का कहना है कि मस्जिद सरकारी जमीन पर अवैध रूप से बनाई गई थी और सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत के आदेश के बाद इसे हटाया गया है। वहीं कार्रवाई को लेकर सियासत तेज हो गई है। समाजवादी पार्टी, कांग्रेस, AIMIM और BSP ने सवाल उठाए हैं, जबकि BJP का कहना है कि कार्रवाई अदालत के आदेश के मुताबिक हुई है। इसे धार्मिक नजरिए से नहीं देखा जाना चाहिए।

कलेक्ट्रेट परिसर में कार्रवाई के दौरान बड़ी संख्या में पुलिस और सुरक्षाबलों को तैनात किया गया था। प्रशासन के मुताबिक, मस्जिद करीब ३१५ वर्ग मीटर जमीन पर बनी हुई थी। इसे लेकर शिकायत की गई थी कि इसका निर्माण सरकारी जमीन पर अवैध तरीके से किया गया है।

मामला सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत में पहुंचा तो जमीन से जुड़े दस्तावेजों की जांच की गई। खसरा संख्या-५३९ सरकारी अभिलेखों में कचहरी/कलेक्ट्रेट के नाम दर्ज है। इसी जमीन के करीब ३१५ वर्ग मीटर हिस्से पर मस्जिद का निर्माण किया गया



अखिलेश-ओवैसी ने यूपी सरकार पर उठाए सवाल

मस्जिद पर कार्रवाई की खबर के बाद राजनीतिक हलचल भी तेज हो गई। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव और AIMIM प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने भी प्रशासन की कार्रवाई पर सवाल उठाए। विपक्ष का आरोप है कि उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार मस्जिदों को जानबूझकर निशाना बना रही है। विपक्ष यह सवाल भी उठा रहा है कि मस्जिद को गिराने की इतनी जल्दी क्यों थी और प्रशासन ऊपरी अदालत में कानूनी प्रक्रिया पूरी होने का इंतजार क्यों नहीं कर सकता था। तनाव को देखते हुए प्रशासन पहले से अलर्ट पर था। विपक्ष के कई नेताओं ने सोशल मीडिया के जरिए कार्रवाई का विरोध किया। कैराना से सांसद इकरा हसन भी सहारनपुर जाने के लिए निकलीं, लेकिन पुलिस ने उन्हें रास्ते में ही रोक दिया। इसके बाद उन्हें हाउस अरेस्ट कर दिया गया। वहीं सहारनपुर से कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने कार्रवाई को संविधान के लिए 'काला दिन' बताते हुए कहा कि इस मामले को हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक ले जाया जाएगा।

था। सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत ने निर्माण को अवैध मानते हुए इसे ३० दिनों के भीतर हटाने का आदेश दिया था। मुस्लिम पक्ष की ओर से इस फैसले के खिलाफ अपील की गई, लेकिन अपील खारिज हो गई। इसके

धर्म के चश्मे से न देखें : भाजपा

भाजपा ने विपक्ष के आरोपों को खारिज किया है। पार्टी नेता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि कार्रवाई कानूनी प्रक्रिया और अदालत के आदेश के आधार पर की गई है। इसे किसी धर्म या समुदाय के खिलाफ कार्रवाई के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। BSP प्रमुख मायावती ने भी मामले पर रिएक्शन देते हुए सरकार की कार्रवाई और उससे पैदा हुई स्थिति को लेकर सवाल उठाए हैं। मस्जिद गिराए जाने के बाद किसी अग्रिय स्थिति से निपटने के लिए कलेक्ट्रेट और आसपास के इलाकों में भारी संख्या में सुरक्षाबलों की तैनाती की गई है।

भूमि मानते हुए मस्जिद को अवैध निर्माण माना। आदेश में परिसर खाली करने के साथ-साथ ६ करोड़ ४१ लाख ६५ हजार ५६५ रुपये की क्षतिपूर्ति भी तय की गई। यानी मामला सिर्फ जमीन खाली कराने तक सीमित नहीं था। प्रशासन की ओर से यह भी माना गया कि सरकारी भूमि के इस्तेमाल से संबंधित नुकसान या कब्जे के एवज में क्षतिपूर्ति तय की जानी चाहिए। मस्जिद कमेटी ने इस आदेश को चुनौती दी। उसका तर्क था कि जमीन को वक्फ संपत्ति माना जाना चाहिए और मस्जिद लंबे समय से वहां मौजूद है। इसी के साथ कमेटी ने आगे की कानूनी लड़ाई जारी रखी। सिटी मजिस्ट्रेट के आदेश के खिलाफ मस्जिद

कमेटी ने जिला अदालत में अपील की। यहां मामला जिला जज सतेंद्र कुमार की अदालत पहुंचा। २ सितंबर को जिला जज की अदालत ने मस्जिद पक्ष की अपील खारिज कर दी और सिटी मजिस्ट्रेट के १६ जुलाई के आदेश को बरकरार रखा। यही आदेश आगे की कार्रवाई का आधार बना।

१०० साल से ज्यादा

पुरानी मस्जिद होने का दावा
मस्जिद कमेटी और विपक्षी नेताओं का दावा है कि यह मस्जिद १०० साल से भी ज्यादा पुरानी है और उसके पास पुराने दस्तावेज मौजूद हैं। सिटी मजिस्ट्रेट कुलदीप सिंह की अदालत ने १६ जुलाई को इस मामले से निपटने के लिए कलेक्ट्रेट और आसपास के इलाकों में भारी संख्या में सुरक्षाबलों की तैनाती की गई है।

विवाद का असली केंद्र क्या है?
प्रशासन और सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत ने इसे सरकारी भूमि माना है। मस्जिद कमेटी इसे वक्फ संपत्ति बताती रही है। मस्जिद कितनी पुरानी है और पुराने दस्तावेज क्या साबित करते हैं? मस्जिद पक्ष का दावा है कि इसके पास १९११ के रिकॉर्ड हैं और मस्जिद इससे भी पुरानी है। प्रशासन की तरफ से अदालत में इन दावों को पर्याप्त साक्ष्य नहीं माना गया।

सुलह, सहमति और संदेशों के साथ ब्रिक्स का समापन



नई दिल्ली : दुनिया जब युद्ध और टकराव के बीच उलझी है, तब नई दिल्ली से ब्रिक्स ने सुलह, सहमति और कूटनीति का संदेश दिया. भारत की अध्यक्षता में हुए १८वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन का समापन नई दिल्ली घोषणा को सर्वसम्मति से स्वीकार किए जाने के साथ हुआ.

ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक अलग-अलग मुद्दों पर सदस्य देशों के मतभेदों के बीच सहमति बनाना था. खासकर पश्चिम एशिया के सवाल पर ईरान और UAE की अलग-अलग चिंताओं के बावजूद साझा घोषणा पर सहमति बनी.

सम्मेलन की अहम उपलब्धियों में नई दिल्ली घोषणा रही. इसमें ब्रिक्स देशों ने अंतरराष्ट्रीय विवादों के समाधान के लिए संवाद, परामर्श और कूटनीति को रास्ता बनाने पर सहमति जताई. घोषणा में पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव पर चिंता जताते हुए सभी पक्षों से अधिक संयम बरतने की अपील की गई है.

भारत की कामयाबी क्यों अहम ?

- अमेरिकी रुख के बीच भारत ने ईरान, सऊदी और UAE में सहमति बनाकर नई दिल्ली घोषणापत्र पारित कराया.
- साझा घोषणा, पहलगाम निदा और जिनपिंग-मोदी बैठक से भारत का वैश्विक नेतृत्व और रणनीतिक संतुलन मजबूत हुआ.
- गलवान के बाद जिनपिंग की भारत यात्रा ने रिश्तों में सुधार के संकेत दिए; चीन-रूस विकल्पों का संदेश अमेरिका को मिला.
- टैरिफ दबाव के बावजूद भारत ने स्थानीय मुद्रा व्यापार और डॉलर निर्भरता घटाने पर जोर देकर संतुलित कूटनीति दिखाई.

साथ ही एकतरफा प्रतिबंधों और व्यापारिक पाबंदियों पर भी चिंता जाहिर की गई. ब्रिक्स समिट के दूसरे दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टेक्नोलॉजी और क्रिटिकल मिनरल्स को लेकर बड़ा संदेश दिया. पीएम मोदी ने कहा कि टेक्नोलॉजी और जरूरी मिनरल्स का हथियार की तरह इस्तेमाल BRICS देशों की साझा तरक्की में रुकावट डाल सकता है. ऐसे में टेक्नोलॉजी को अपनाने की प्रक्रिया में सभी को साथ लेकर चलना जरूरी है. पीएम ने कहा कि भारत की

ब्रिक्स अध्यक्षता के दौरान रेजिलिएंस, इनोवेशन, कोलैबोरेशन और सस्टेनेबिलिटी पर खास फोकस किया गया. इसी सोच के तहत टेक्नोलॉजी, स्टार्टअप, सप्लाय चेन और डिजिटल खेती जैसे क्षेत्रों में कई पहल की गई हैं. पीएम मोदी ने ब्रिक्स नेटवर्क ऑन डिजिटल एप्रीकल्चर का जिक्र करते हुए कहा कि इससे किसानों के लिए नए अवसर पैदा होंगे. इस पहल के जरिए AI, जियोस्पेशियल टेक्नोलॉजी और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को किसानों की

नई दिल्ली घोषणा पत्र की ५ बड़ी बातें

- आतंकवाद पर सख्त संदेश, पहलगाम का जिक्र**
ब्रिक्स घोषणा में आतंकवाद के खिलाफ स्पष्ट और कड़ा रुख सामने आया. पहलगाम आतंकी हमले की निंदा के साथ आतंकवाद के वित्तपोषण और उसके नेटवर्क पर कार्रवाई की जरूरत दोहराई गई. इसका महत्व इसलिए भी है क्योंकि BRICS में चीन, रूस और ईरान जैसे देश शामिल हैं.
- युद्ध नहीं, बातचीत से रास्ता निकालने का संदेश**
यूक्रेन से लेकर पश्चिम एशिया तक जारी संघर्षों के बीच BRICS ने संवाद और कूटनीति को समाधान का रास्ता बताया. खास तौर पर युद्ध के दौरान व्यापार और कमर्शियल शिपिंग की सुरक्षा बेहद अहम है, क्योंकि समुद्री रास्तों में तनाव बढ़ने का सीधा असर तेल, खाद्य पदार्थों और वैश्विक सप्लाय चेन पर पड़ता है. BRICS की यह लाइन भारत की उस पारंपरिक नीति के अनुरूप है जिसमें संघर्षों का समाधान बातचीत और कूटनीति से निकालने पर जोर दिया जाता है.
- बाजार और सप्लाय चेन पर बड़ा दांव**
ब्रिक्स देशों ने Global Value Chains Action Plan २०२६-२०३० को आगे बढ़ाने पर जोर दिया है. सदस्य देशों के बीच सप्लाय चेन मजबूत हो. बाजारों तक पहुंच आसान हो और एक-दूसरे के साथ व्यापार व निवेश बढ़े. इसके तहत रणनीतिक सप्लाय चेन, निवेश और फार्मा जैसे क्षेत्रों में सहयोग की संभावना भी रखी गई है. .
- सैटेलाइट से पर्यावरण और आपदा पर नजर**
BRICS Space Council की दिशा में भी काम आगे बढ़ रहा है. यानी अंतरिक्ष अब केवल वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं, बल्कि BRICS देशों के बीच व्यावहारिक सहयोग का बड़ा क्षेत्र बन रहा है.
- UNSC सुधार और Global South की आवाज**
ब्रिक्स ने वैश्विक संस्थाओं में सुधार और Global South की ज्यादा भागीदारी की जरूरत दोहराई. भारत लंबे समय से कहता रहा है कि संयुक्त राष्ट्र सप्लाय परिषद की मौजूदा संरचना आज की दुनिया की वास्तविकता को पूरी तरह नहीं दर्शाती. ऐसे में BRICS का यह रुख भारत के लिए बड़ी कूटनीतिक उपलब्धि माना जा सकता है. इसका व्यापक संदेश यह है कि वैश्विक फैसलों में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे विकासशील क्षेत्रों की प्रतिनिधित्व बढ़ना चाहिए.

वास्तविक जरूरतों से जोड़ा जाएगा. मकसद यह है कि तकनीक का इस्तेमाल सीधे खेती और किसानों से जुड़ी जरूरतों के समाधान में हो. पीएम मोदी ने ब्रिक्स इन्क्यूबेटर नेटवर्क और स्टार्टअप इनोवेशन फंड

का जिक्र करते हुए कहा कि इन पहलों से स्टार्टअप और इनोवेशन को बढ़ावा मिलेगा. लॉजिस्टिक सप्लाय चेन को ऑपरेशन प्रेमवर्क से सप्लाय चेन को ज्यादा मजबूत और भरोसेमंद बनाने में मदद मिलेगी.

सत्य निकेतन इलाके में दर्दनाक हादसा

दिल्ली में पांच मंजिला बिल्डिंग टूटी, ५ की मौत



नई दिल्ली : साउथ दिल्ली के सत्य निकेतन इलाके में रविवार दोपहर एक दर्दनाक हादसे ने पूरे इलाके को हिलाकर रख दिया. यहां एक पांच मंजिला इमारत अचानक भरभराकर ढह गई. इमारत का इस्तेमाल लड़कों के पेइंग गेस्ट यानी PG के तौर पर किया जा रहा था. हादसे के बाद मलबे में कई लोगों के दबे होने की आशंका जताई गई है. हादसे में अब तक ५ लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि कई घायलों को बाहर निकाला गया है. इनमें ६ की हालत गंभीर है. फिलहाल राहत-बचाव अभियान जारी है.

हादसा रविवार दोपहर करीब १:३० बजे हुआ. इमारत में बेसमेंट के अलावा पांच ऊपरी मंजिलें थीं. प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक इमारत

के अचानक गिरते ही इलाके में धूल का गुबार छा गया और आसपास रहने वाले लोगों में भगदड़ जैसी स्थिति बन गई. स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस और प्रशासन को सूचना दी. इसके बाद दिल्ली पुलिस, दमकल विभाग, एनडीआरएफ और डीडीएमए की टीमों मौके पर पहुंची और बड़े पैमाने पर रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया. शुरुआती जांच में बेसमेंट में चल रहे काम की भूमिका की पड़ताल की जा रही है. सत्य निकेतन दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैंपस के पास स्थित है और इलाके में बड़ी संख्या में छात्र PG और किराये के कमरों में रहते हैं. ऐसे में हादसे के बाद छात्रों और उनके परिवारों की चिंता बढ़ गई है. इधर, दिल्ली की

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता भी घटनास्थल पर पहुंचीं और राहत एवं बचाव कार्य का जायजा लिया. उन्होंने हादसे के जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का भरोसा दिया है. प्रधानमंत्री ने भी हादसे पर दुख जताया और मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की. एक चश्मदीद ने बताया कि वह दुकान में बैठे थे, तभी अचानक भूकंप जैसी तेज आवाज सुनाई दी. लोग घबराकर बाहर भागे तो चारों तरफ धूल और धुआं था और पूरी इमारत मलबे में तब्दील हो चुकी थी. मलबे के अंदर से बच्चों के 'बचाओ-बचाओ' की आवाजें भी सुनाई दे रही थीं. मलबे के अंदर से लगातार आ रहे थे फोन, अपनों से मदद की गुहार लगा रहे थे.



अमित शाह हर साल लालबागचा राजा गणपति मंडल में दर्शन करने के लिए आते हैं। इस साल भी अमित शाह अपने परिवार के साथ लालबागचा राजा के दर्शन करने पहुंचे। इस दौरान वह सबसे आगे नजर आए। उनकी गोद में उनका पोता भी था। साथ में पत्नी सोनल शाह, बेटा जय शाह और बहू रश्मिता शाह भी थीं। खास बात रही कि अमित शाह बांद्रा पश्चिम में सार्वजनिक गणेशोत्सव मंडल पहुंचे तो यहां भी उनका पोता उनके साथ था।

सीमाएं बदलते ही कैसे बदल जाते हैं गणपति

(पेज १ पर से)
तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले के सुचिद्रम में स्थित श्रीसुचिद्रम थानुमलयन स्वामी मंदिर में गणेशजी के दुर्लभ स्त्री रूप देवी विनायकी की प्राचीन प्रतिमा देखी जा सकती है. इन्हें देवी गणेशिनी भी कहा जाता है. हालांकि ये लोककथाएं सिर्फ स्थान विशेष की मान्यताओं से जुड़ी हैं. सीमाएं बदलते ही ये मान्यताएं भी छोटी पड़ जाती हैं. जरूरी बात यह है कि दक्षिण की अनेक धार्मिक परंपराओं में श्रद्धालु गणपति को पत्नी और संतान वाले गृहस्थ देवता के बजाय ब्रह्मचारी स्वरूप में पूजते आए हैं. बाल गणेश की अवधारणा भी कुछ-कुछ इससे ही मिलती-जुलती है.

उत्तर भारत में सिद्धि-बुद्धि या रिद्धि-सिद्धि के पति
उत्तर भारत आते-आते तस्वीर बदल जाती है. यहां घरों से लेकर मंदिरों तक 'रिद्धि-सिद्धि दाता गणेश' की धारणा लोकप्रिय है. कई चित्रों और प्रतिमाओं में गणपति के साथ दो स्त्री आकृतियां दिखाई देती हैं. पुराणों में इस परंपरा का एक अलग स्वरूप मिलता है. शिव पुराण की कथा में प्रजापति विश्वरूप की दो पुत्रियां सिद्धि और बुद्धि का विवाह गणेशजी से बताया गया है. इसी कथा में सिद्धि से 'क्षेम' और बुद्धि से 'लाभ' नामक पुत्रों का उल्लेख मिलता है. बाद की उत्तर भारतीय लोकप्रिय मान्यताओं में यही परंपरा 'शुभ-लाभ' और 'रिद्धि-सिद्धि' के रूप में अधिक परिचित हो गई. इसका प्रतीकात्मक अर्थ भी महत्वपूर्ण है. बुद्धि यानी विवेक और ज्ञान, रिद्धि यानी सफलता या आध्यात्मिक उपलब्धि, सिद्धि यानी समृद्धि. इस तरह गणेश की पत्नियों को पारिवारिक पात्रों के रूप में देखने के बजाय गणपति के गुणों और शक्तियों का मानवीकरण भी माना गया है.

महाराष्ट्र में गणपति का अलग रंग
महाराष्ट्र गणेश उपासना का सबसे प्रमुख केंद्र

माना जाता है. यहां अष्टविनायक की परंपरा से लेकर सार्वजनिक गणेशोत्सव तक गणपति लोकजीवन के केंद्र में हैं. अष्टविनायक में मोरगांव के मयूरेश्वर मंदिर का विशेष महत्व है. यहां गणपति के साथ सिद्धि और बुद्धि की उपस्थिति वाली परंपरा भी मिलती है. इसलिए गणपति को केवल 'विवाहित' या 'अविवाहित' के दो खांचों में बांटना आसान नहीं है. अलग मंदिरों, आख्यानों और उपासना परंपराओं में उनका स्वरूप बदलता दिखाई देता है. **बंगाल में गणेशजी और 'कोला बज्र' की परंपरा**
बंगाल की दुर्गा पूजा में गणेश प्रतिमाओं के पास साड़ी में लिपटा केले का पौधा दिखाई देता है, जिसे 'कोला बज्र' या 'केला बज्र' कहा जाता है. इसे देखकर एक लोकप्रिय धारणा बन गई कि कोला बज्र गणेश की पत्नी हैं. बज्र शब्द बहू का अपभ्रंश भी लगता है. लेकिन धार्मिक परंपरा इससे कहीं अधिक बड़ी है. कोला बज्र वास्तव में नवपत्रिका पूजा का हिस्सा है, जिसमें नौ वनस्पतियों को एक साथ बांधकर देवी शक्ति के स्वरूप में पूजा जाता है. दुर्गा पूजा के मंडप में इसे गणेशजी के निकट स्थापित किए जाने से लोकमान्यता में इसे उनकी पत्नी कहा जाने लगा.

तांत्रिक परंपरा में शक्ति के साथ गणपति
गणेशजी का सबसे रहस्यमय स्वरूप तांत्रिक परंपराओं में मिलता है. यहां वे केवल मोदक लिए हुए मंगलकर्ता बालसुलभ देवता नहीं हैं. शाक्त और तांत्रिक प्रभाव वाली गणपति उपासना में उनके अनेक शक्ति-संयुक्त रूप विकसित हुए. इनमें उच्छिष्ट गणपति, महागणपति, ऊर्ध्व गणपति, पिगल गणपति और लक्ष्मी गणपति जैसे स्वरूपों का जिक्र मिलता है. इनमें कुछ प्रतिमाओं में गणपति अपनी शक्ति को गोद में लिए या आलिंगन करते दिखाई देते हैं. इन स्वरूपों को सामान्य गृहस्थ विवाह की तस्वीर के तौर पर नहीं देखना चाहिए. तंत्र में इनके मायने अधिक जटिल हैं.

बॉम्बे हाईकोर्ट के आदेश पर CBI ने दर्ज की FIR, नए सिरे से जांच शुरू

६ साल बाद फिर खुलेगा दिशा सालियान केस

नई दिल्ली : सुशांत सिंह राजपूत की मैनेजर रहीं दिशा सालियान की मौत का मामला करीब छह साल बाद बड़ा अपडेट सामने आया है. बॉम्बे हाईकोर्ट के निर्देश के बाद CBI ने इस मामले में FIR दर्ज कर जांच अपने हाथ में ले ली है. अब सामने आई FIR की कॉपी में ऐसे कई गंभीर दावे और बिंदु दर्ज हैं, जिनकी जांच केंद्रीय एजेंसी करेगी. इनमें गैंगरेप और हत्या से लेकर सबूतों से छेड़छाड़, पुलिस रिकॉर्ड में बदलाव और दिशा के मोबाइल फोन से जुड़ी कई गड़बड़ियां और आरोप शामिल हैं. इस बीच शुक्रवार को दिशा के पिता सतीश सालियान ने भी CBI अधिकारियों के सामने चार घंटे से ज्यादा समय तक अपना बयान दर्ज कराया. वह अपने वकील नीलेश ओझा के साथ CBI अधिकारियों के सामने पहुंचे थे. सतीश सालियान पहले भी अपनी बेटी की मौत को लेकर बॉम्बे हाईकोर्ट में याचिका दायर कर चुके हैं. उन्होंने आरोप लगाया था कि दिशा के साथ गैंगरेप किया गया और फिर उनकी हत्या कर दी गई. अपने बयान और याचिका में उन्होंने कुछ प्रभावशाली लोगों और पुलिसकर्मियों पर भी गंभीर आरोप



लगाए थे. FIR की कॉपी में कहा गया है कि दिशा सालियान की मौत से जुड़े मुख्य अपराध, कथित आपराधिक साजिश, बाद में बनाई और प्रचारित की गई कथित झूठी आत्महत्या की कहानी और सबूतों को दबाने, नष्ट करने या उनमें कथित हेरफेर की जांच जरूरी है. इस संदर्भ में जिन लोगों की भूमिका की जांच की बात FIR में कही गई है, उनमें आदित्य ठाकरे, रोहन रॉय, डिनो मोरिया, सूरज पंचोली, आदित्य ठाकरे के बांडीगाई, रिया चक्रवर्ती, शोविक चक्रवर्ती, सचिन वाजे, परमबीर सिंह, तत्कालीन DCP विशाल ठाकुर, उद्धव ठाकरे, अनिल देशमुख, API अशोक देवदे, PI जगदेव कलापाड़, PI शैलेंद्र नागरकर, PI

चिमाजी अढ़ाव, PI अर्जुन रजाने और मालवानी पुलिस स्टेशन के संबंधित अधिकारी शामिल हैं. इसके अलावा FIR में देरी से पोस्टमार्टम से जुड़े डॉक्टर और स्टाफ, डॉ. संजय जाधव, कलिन फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी से जुड़े अधिकारी और N.P. भाले का भी जिक्र है. रीजेंट गैलेक्सी बिल्डिंग के सुरक्षा गार्डों में सुशील कुमार यादव और शिवमुराद गौतम एक मुन्ना के नाम भी दर्ज हैं. इनके अलावा प्रीति राणे, प्रवीण राणे, अंकिता सातुर, इंद्रनील वैद्य, दीप अजमेरा, हिमांशु सिखारे, रेशा पडवाल, सतवंत सिंह, नावेद मुजावर और प्रियेश राणे समेत SIT के वरिष्ठ सदस्यों और उन वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की भूमिका की जांच की बात कही गई है. जिनकी निगरानी में जांच हुई थी. FIR में अन्य अज्ञात लोगों को भी शामिल किया गया है. हालांकि बेहद जरूरी है कि FIR में किसी व्यक्ति की भूमिका की जांच की बात होना उसे दोषी या आरोपी साबित नहीं करता. इन दावों की पुष्टि CBI की जांच और उपलब्ध सबूतों के आधार पर ही हो सकेगी. FIR में दिशा के मोबाइल फोन को लेकर कई गंभीर विरोधाभासों का जिक्र किया गया है. दस्तावेज

आदित्य ठाकरे ने आरोपों को बताया था बेबुनियाद
इस मामले में शिवसेना (UBT) नेता आदित्य ठाकरे का नाम सतीश सालियान की याचिका में भी आया था. आदित्य ठाकरे ने इन आरोपों को बेबुनियाद बताया था कि उनका दिशा सालियान की मौत से कोई लेना-देना नहीं है और इसे उन्हे बदनाम करने की कोशिश बताया था. वहीं २ सितंबर को बॉम्बे हाईकोर्ट ने CBI को दिशा सालियान की मौत की जांच करने और FIR दर्ज करने का निर्देश दिया था. कोर्ट ने मुंबई क्षेत्र के CBI जॉइंट डायरेक्टर को एक अनुभवी और वरिष्ठ अधिकारी को जांच अधिकारी नियुक्त करने को कहा था. कोर्ट ने यह भी साफ किया था कि पर्याप्त सबूत सामने आने तक किसी भी व्यक्ति को आरोपी नहीं माना जाना चाहिए. अब CBI की FIR में दर्ज इन तमाम बिंदुओं के बाद करीब छह साल पुराने दिशा सालियान केस में जांच का दायरा काफी अहम हो गया है. दिशा की मौत की रात वास्तव में क्या हुआ था, उनकी मौत की परिस्थितियां क्या थीं, मेडिकल और पुलिस रिकॉर्ड में क्या हुआ, मोबाइल फोन को लेकर उठे सवालों का सच क्या है और FIR में दर्ज तमाम आरोपों में कितनी सच्चाई है- इन सभी सवालों के जवाब अब CBI की जांच में तलाश जाएंगे.

में कहा गया है कि अलग-अलग बयानों और रोहन रॉय के बयान/इंटरव्यू से यह सवाल उठता है कि पुलिस ने ९ जून २०२० को सुबह करीब ९:४० बजे दिशा का मोबाइल अपने कब्जे में ले लिया था. लेकिन FIR के मुताबिक, फोन को जब्त दिखाए जाने के बावजूद बाद में मीडिया रिपोर्टों में सामने आया कि वह फोन एक्टिव रहा और उसके बाद भी इस्तेमाल किया जाता रहा. बताया जा रहा है कि

इसके बाद पुलिस की तरफ से यह स्पष्टीकरण दिया गया कि फोन को सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद संभावित कनेक्शन की जांच के लिए दोबारा खोला गया था. FIR में दावा किया गया है कि यह स्पष्टीकरण भी उपलब्ध सामग्री से मेल नहीं खाता था और इसके बाद पहले के जल्दी रिकॉर्ड दबा दिए गए या नष्ट कर दिए गए तथा फोन को कब्जा और किन परिस्थितियों में जब्त किया गया,

नेपाल बाढ़ के वीडियो ने खींचा ध्यान

नई दिल्ली : नेपाल में आई बाढ़ ने वहां भारी तबाही मचाई है. इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर जान-माल तक, भारी नुकसान हुआ है. अभी भी लोग अपनों की तलाश में मलबों की खाक खान रहे हैं. पानी कम होने के साथ ही लोग कीचड़ और मलबों को हटा-हटाकर खोए लोगों को खोज रहे हैं. वहीं जिनका घर और सबकुछ बह गया, वो अपना कुछ भी मिल जाने की उम्मीद में मलबों को तलाश रहे हैं. इसी बीच कुछ लोगों के हाथ वैसी चीजें भी आ रही हैं, जो उनका तो नहीं हैं, लेकिन हिरान कर देने वाला जरूर है. नेपाल से ऐसे कई वीडियो सामने आ रहे हैं. जिनमें मलबे के नीचे से नोटों की गड़्डी या फिर महंगे सामान मिलते दिखाई दे रहे हैं. कुछ वीडियो में दावा किया जा रहा है कि लोकल बैंक के ब्रांच का वॉल्ट भी बाढ़ में बह गया था, जो अब लोगों के हाथ लग रहा है. इन सब के बीच एक वीडियो ने काफी लोगों का ध्यान खींचा है और अलग-अलग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर खूब वायरल हो रहा है. इसमें नेपाल के बाढ़ प्रभावित इलाके में कुछ लोग मलबे और कीचड़ के नीचे दबे हुए सामान बाहर निकाल रहे हैं. इसी में एक लाल रंग की साड़ी में लिपटा काफी सारा केश लोगों को मिलता है. इसी दौरान एक शास्त्र को एक लाल रंग का हैंड बैग भी मिलता है. जब उसे खोलकर लोग जांच करते हैं, तो अंदर से नोटों की गड़्डियां भरी दिखाई देती हैं. वीडियो में मलबे के नीचे से बाढ़ में बहकर आए ऐसी चीजों को निकालने वाले लोग ऑरेंज जैकेट में रेस्क्यूअर टीम के लग रहे हैं.

वक्रतुण्ड महाकाय
सूर्यकोटी समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव
सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

बाप्पा आमच्या घरी...

लोकतंत्र मिरर

नागपूर, 25 सितम्बर 2026



केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी परिवार के साथ



श्री देवेंद्रजी फडणवीस मुख्यमंत्री महाराष्ट्र राज्य



श्री चंद्रशेखरजी बावनकुळे महसूल मंत्री महाराष्ट्र राज्य



डॉ. आयुश्री, डॉ. आशिष देशमुख, आमदार-सावनेर



मा. केंद्रीय राज्यमंत्री श्री मुरलीधर (अण्णा) मोहोळ



श्री विनोदजी तायडे भाजप राष्ट्रीय सरचिटणीस



अपूर्वा श्रवण आसावा, श्री शांतीनगर
सोसायटी, कोंढवा बुद्रुक, पुणे



नितीन कंठीराम चिनोरे,
जुनी मंगळवारी नागपूर



१२१ वर्षाची महालक्ष्मी पूजन परंपरा,
श्री राजेश निंबाळकर, हनुमान नगर, नागपूर



श्री राकेश मुकुंदराव पन्नासे



डॉ. कुलकर्णी संजीवनी ऑर्थोपेडीक अँड फ्रॅक्चर हॉस्पिटल, चंद्रपूर



सचिन कापुरे, लोणार, ८८८८८८५०८



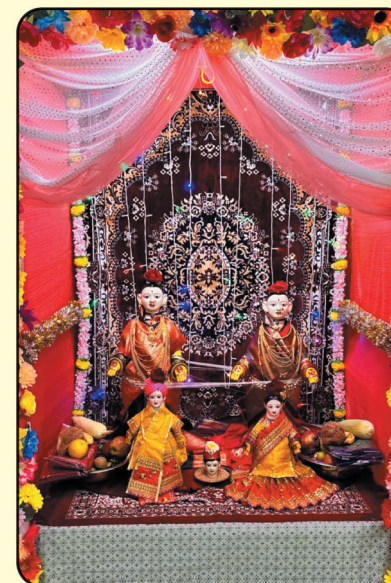
चेतन खडसे, जिल्हाध्यक्ष नागपूर ग्रामीण,
भारतीय जनता युवा मोर्चा कामठी



श्री ए.आर. सुमित मनोहर येवले, गुरुनगर,
प्लॉट क्रमांक :-५०, भद्रावती, चंद्रपूर



श्रीनिका राहुल देशमुख



१२० वर्षे जुनी महालक्ष्मी, मंदार मोनाली
दीपकराव लाखे, नरेंद्र नगर, नागपूर.



नितीन तुकाराम नंदनवार, गोविंद नगर,
नाशिक

वक्रतुण्ड महाकाय
सूर्यकोटी समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव
सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

बाप्पा आमच्या घरी...

लोकतंत्र मिरर

नागपूर, 25 सितंबर 2026



किशोर कुलकर्णी



डॉ प्रणाली म्हात्रे, नागपूर



शिवजीत अनिल कोल्हे, पारशिवनी, नागपूर



राहुल रवींद्र मस्के, त्रिमूर्ति नगर नागपूर



श्री. अमित चारुलता अरुण मंगरे,
शास्त्रीनगर एनआयटी गार्डन जवळ, नागपूर



१२० वर्ष जुनी महालक्ष्मी,
अविनाश सरजेराव पिठोरे, धाबा, नागपूर



शास्त्रीनगर गणराज मित्र मंडळ, शास्त्री
नगर, नागपूर



राष्ट्रवादी काँग्रेसचे जिल्हाध्यक्ष, सेंट पॉल
एज्युकेशन संस्थेचे सर्वेसर्वा श्री राजाभाऊ
टाकसाळे घरच्या गणेशा सोबत.



दिनेश शालिनी यशवंतराव खापर्डे,
साईनगर, अमरावती



अथर्व अंजली अभय करवा, पुणे



जयश्री तुषार देशमुख एल आय जी-७/३७८,
स्नेहसागर सोसायटी गोखलेनगर, पुणे-१६



लिना अॅण्ड हितेन दलाल, कॅलिफोर्निया युएसए



नेहा आणि पवन गुजरकर,
पुणे



पंकज पांडे,
शीतलवाडी रामटेक



संदीप वाघ, रेशीमबाग नागपूर.



श्री. टी. के. शाजी, अल्फा
इंटरप्राइजेस प्रायव्हेट लिमिटेड, पुणे



श्री गोविंद प्र पिंगळे गंगापूर रोड नाशिक



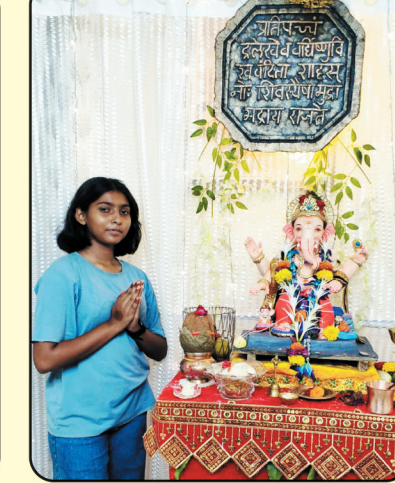
बालाजी बच्चेवार, भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य
महा. (नायगाव विधानसभा मतदारसंघ) नांदेड



प्रभाकर पत्रिकार, भोसलावेद शाळा नाईक
रोड महाल नागपूर



डॉ. रिता विवेक सोनटक्के, लॉस
एंजलिस, कॅलिफोर्निया, युएसए



स्वरा सारंग काटे,
म्हाळगी नगर, नागपूर.



विनोद कराळे
आय सी ए आय



यश जगताप आणि ईशान जगताप, मुकुंद नगर पुणे



सौ. स्मिता अरविंद सराफ विजयानंद सोसायटी प्लॉट नंबर ४९ नरेंद्र नगर नागपूर



डॉ. शिवांगी जहागीरदार, शिवाजी नगर, नागपूर



वर्षा विजय देशपांडे, शंकरपूर रोड, खापरी नागपूर,
मोबा. ८४२९१७८००९